वैराग्य भावना | By Rohit Chaturvedi

ये दुनिया दो दिन का मेला जो आवे सो जावे
जीवन भर सुलगावै चिंता मरत चिता सुलगावै ।।
ये दुनिया दो दिन का मेला जो आवे सो जावे
जीवन भर सुलगावै चिंता मरत चिता सुलगावै ।।

बिजली जैसी जीवन लीला चमके और नशावे
पुत्र जन्म तो होये सवेरे सांझ चिता जल जावे ।।
ये दुनिया दो दिन का मेला जो आवे सो जावे
जीवन भर सुलगावै चिंता मरत चिता सुलगावै ।।

अमर नहीं कोई धरती पर मरते कौन बचावे
मंत्र तंत्र कछु काम न आवे मरण घड़ी जब आवे ।।
ये दुनिया दो दिन का मेला जो आवे सो जावे
जीवन भर सुलगावै चिंता मरत चिता सुलगावै ।।

निर्बल हो या वीर बलि हो काल बलि ले जावे
हाथी पर जाने वाला भी अर्थी पर आ जावे ।।
ये दुनिया दो दिन का मेला जो आवे सो जावे
जीवन भर सुलगावै चिंता मरत चिता सुलगावै ।।

तन पिंजरे से प्राण पखेरू जब बाहर उड़ जावे
घर वाली द्वारे तक जावे बेटा आग लगावे ।।
ये दुनिया दो दिन का मेला जो आवे सो जावे
जीवन भर सुलगावै चिंता मरत चिता सुलगावै ।।

रोने वाले रोने जावे जाने वाले जाते
सुन्दर काय भी मरघट में राख राख हो जावे ।।
ये दुनिया दो दिन का मेला जो आवे सो जावे
जीवन भर सुलगावै चिंता मरत चिता सुलगावै ।।

कोई दौलत और हुकूमत पाकर के इतरावे
यौवन बल सुंदरता में ही कोई ठूला जावे
ये दुनिया दो दिन का मेला जो आवे सो जावे
जीवन भर सुलगावै चिंता मरत चिता सुलगावै ।।

शब्दों का अभिमानी कोई औरो को समझावे
चंद दिनों का ठाठ मुसाफिर फिर डेरा उठ जावे ।।
ये दुनिया दो दिन का मेला जो आवे सो जावे
जीवन भर सुलगावै चिंता मरत चिता सुलगावै ।।

आशा पल पल बढ़ती जावे आयु घटती जावे
काया निशदिन जार जार होवे माया बढ़ती जावे ।।
ये दुनिया दो दिन का मेला जो आवे सो जावे
जीवन भर सुलगावै चिंता मरत चिता सुलगावै ।।

आज सरीका मंगल अवसर कल आवे ना आवे
किधर ज़िंदगी के किस डेग पर क्या घटना घाट जाव ।।
ये दुनिया दो दिन का मेला जो आवे सो जावे

जीवन भर सुलगावै चिंता मरत चिता सुलगावै।।

कल कल की कल कल में प्राणी निज कल्याण भुलावे
आज और कल में कोई भी मेल नज़र ना आवे।।
ये दुनिया दो दिन का मेला जो आवे सो जावे
जीवन भर सुलगावै चिंता मरत चिता सुलगावै।।

इच्छाओं का चूर न देखे दुनिया तनिक दिखावे
लाख सरिता ऐ सागर को तृप्त नहीं कर पावे।।
ये दुनिया दो दिन का मेला जो आवे सो जावे
जीवन भर सुलगावै चिंता मरत चिता सुलगावै।।

मन की आशा का होनी से क्या सम्बन्ध कहावे
जाने वाले जीवन पावे जीने वाला जावे।।
ये दुनिया दो दिन का मेला जो आवे सो जावे
जीवन भर सुलगावै चिंता मरत चिता सुलगावै।।

खाली दीपक ज्योति जलावे और भरा बुझ जावे
जग को जिसकी होये न आशा मौत उसे ले जावे।।
ये दुनिया दो दिन का मेला जो आवे सो जावे
जीवन भर सुलगावै चिंता मरत चिता सुलगावै।।

यह जीवन घाटे का सौदा कौन किसे समझावे
जीने की तयारी में ही सारा जीवन जावे।।
ये दुनिया दो दिन का मेला जो आवे सो जावे
जीवन भर सुलगावै चिंता मरत चिता सुलगावै।।

अपनी बर्बादी पर नर को आखिर रोना आवे
मरने को जन्मे यह प्राणी जन्म हेतु मर जावे।।
ये दुनिया दो दिन का मेला जो आवे सो जावे
जीवन भर सुलगावै चिंता मरत चिता सुलगावै।।

आप अकेला आवे प्राणी आप अकेला जावे
ना कुछ लावे ना लेजावे तो भी मन भरमावे।।
ये दुनिया दो दिन का मेला जो आवे सो जावे
जीवन भर सुलगावै चिंता मरत चिता सुलगावै।।

करनी का परिणाम जगत में आप अकेला पावे
आप अकेला वैरागी बन मोक्ष महापद पावे।।
ये दुनिया दो दिन का मेला जो आवे सो जावे
जीवन भर सुलगावै चिंता मरत चिता सुलगावै।।

खुशियों में है साथ सभी का संकट कौन उठावे
विपदा में ही संगी साथी ढूंढत नहीं दिखावे।।
ये दुनिया दो दिन का मेला जो आवे सो जावे
जीवन भर सुलगावै चिंता मरत चिता सुलगावै।।

अपने भी तब होये पराये जब आफत सर पर छाये
मतलब का है प्रेम सभी का किसका कौन कहावे।।
ये दुनिया दो दिन का मेला जो आवे सो जावे
जीवन भर सुलगावै चिंता मरत चिता सुलगावै।।

नश्वर काय की सेवा में जन्म वृथा हो जावे
तन का नित श्रृंगार करे पर मन मैला रह जावे।।
ये दुनिया दो दिन का मेला जो आवे सो जावे
जीवन भर सुलगावै चिंता मरत चिता सुलगावै।।

जन्म धरत ही शोर माचवे मरत ही सूतक छावे
माटी की ये काय आखिर माटी में मिल जाव।।
ये दुनिया दो दिन का मेला जो आवे सो जावे
जीवन भर सुलगावै चिंता मरत चिता सुलगावै।।

नर काय से नर चाहे तो नर भाव सफल बनावे
ना चाहे तो पाप कमा कर दुर्गतिओं में जाए।।
ये दुनिया दो दिन का मेला जो आवे सो जावे
जीवन भर सुलगावै चिंता मरत चिता सुलगावै।।

जिनके खातिर पाप करे नर वह आखिर ठुकरावे
कौन कहाँ तक होये सागा जब देह देगा दे जावे।।
ये दुनिया दो दिन का मेला जो आवे सो जावे
जीवन भर सुलगावै चिंता मरत चिता सुलगावै।।

बड़भागी आतम हित चाहे जड़ को जड़ ही भावे
बचपन में हित अहित ना जाने यौवन मौज मानावे।।
ये दुनिया दो दिन का मेला जो आवे सो जावे
जीवन भर सुलगावै चिंता मरत चिता सुलगावै।।

प्रौढ़ दशा भी ते तृष्णा में फिर बूढ़ापन आवे
यही दुर्लभ जन्म गवा कर अर्ध मृतक पछतावे।।
ये दुनिया दो दिन का मेला जो आवे सो जावे
जीवन भर सुलगावै चिंता मरत चिता सुलगावै।।

पुण्य उदय से पापी को भी कोई आंच ना आवे
पापो का जब पाक पके तब दु:ख में गोता खावे।।
ये दुनिया दो दिन का मेला जो आवे सो जावे
जीवन भर सुलगावै चिंता मरत चिता सुलगावै।।

विश्व विजेता बीमारी से अंत समय दु:ख पावे
मुख पर बैठी माँ की गामा हाय उड़ा न पावे।।
ये दुनिया दो दिन का मेला जो आवे सो जावे
जीवन भर सुलगावै चिंता मरत चिता सुलगावै।।

दुनिया के इस नाटक घर में कितने खेल दिखावे
जन्म डहरे तब रोवे बालक मात पिता हर्शाव।।
ये दुनिया दो दिन का मेला जो आवे सो जावे
जीवन भर सुलगावै चिंता मरत चिता सुलगावै।।

माँ से दूर चले जब कन्या अखियां छलकत जावे
निज संतान भखे कुटिया जब भूक सही ना जावे।।
ये दुनिया दो दिन का मेला जो आवे सो जावे
जीवन भर सुलगावै चिंता मरत चिता सुलगावै।।

सबकी प्यास बुझाने वाला प्यासा ही मरजावे

लाखो का मालिक भी जग में भिखमंगा हो जावे।।
ये दुनिया दो दिन का मेला जो आवे सो जावे
जीवन भर सुलगावै चिंता मरत चिता सुलगावै।।

आज यहाँ जो हस्ता जाता कल रोवे चिल्लावे
यह संसार महादु:खदाई जो बोवे सो पावे।।
ये दुनिया दो दिन का मेला जो आवे सो जावे
जीवन भर सुलगावै चिंता मरत चिता सुलगावै।।

कर्मन की गति न्यारी जग में मन की समझ ना आवे
राज तिलक की मंगल बेला राम सिया बन जावे।।
ये दुनिया दो दिन का मेला जो आवे सो जावे
जीवन भर सुलगावै चिंता मरत चिता सुलगावै।।

पूनम और अमावस जैसे सुख दु:ख आवे जावे
समय खिलावे खेल निराले सबको नाच नचावे।।
ये दुनिया दो दिन का मेला जो आवे सो जावे
जीवन भर सुलगावै चिंता मरत चिता सुलगावै।।

चार दिनों की सुखद चांदनी फिर अँधियारो छावें
कोण कहाँ से आकर जन्मा मौत कहाँ ले जावे।।
ये दुनिया दो दिन का मेला जो आवे सो जावे
जीवन भर सुलगावै चिंता मरत चिता सुलगावै।।

अपनी सम्पद मान धरा को लाखों आवे जावे
मुठी बांध जगत में आवै हाथ पसारे जावे।।
ये दुनिया दो दिन का मेला जो आवे सो जावे
जीवन भर सुलगावै चिंता मरत चिता सुलगावै।।

पल भर के सब रिश्ते नाते पल भर में मिट जावै
कल के साथी आज ना दिखें सुधियाँ भर रह जावे।।
ये दुनिया दो दिन का मेला जो आवे सो जावे
जीवन भर सुलगावै चिंता मरत चिता सुलगावै।।

मिलान विरह की रीत पुरानी कोई ताल ना पावे
जरत कुंवर के बाण लगे से नारायण मर जावे।।
ये दुनिया दो दिन का मेला जो आवे सो जावे
जीवन भर सुलगावै चिंता मरत चिता सुलगावै।।

जिनके एक इशारे में ही बलशाली थर्रावे
जिनके पैरों की ठोकर से पर्वत भी गिर जावे।।
ये दुनिया दो दिन का मेला जो आवे सो जावे
जीवन भर सुलगावै चिंता मरत चिता सुलगावै।।

काल बलि के सम्मुख वे भी नतमस्तक हो जावे
यम से टकराने वाला भी कोण कहाँ से आवे।।
ये दुनिया दो दिन का मेला जो आवे सो जावे
जीवन भर सुलगावै चिंता मरत चिता सुलगावै।।

जीवन का यह उज्वल दीपक पल पल बुझता जावे
मानव मन के महल बानवे तन कुटिया गिर जावे।।

ये दुनिया दो दिन का मेला जो आवे सो जावे
जीवन भर सुलगावै चिंता मरत चिता सुलगावै।।

बचपन हो या होये जवानी मौत रेहम ना खावे
चेतन दूजी काय धारे पहली मरघट जावे।।
ये दुनिया दो दिन का मेला जो आवे सो जावे
जीवन भर सुलगावै चिंता मरत चिता सुलगावै।।

आवे जब मदहोश जवानी एक नशा छा जावे
भोलापन तब रंच ना दिखे कोई क्या समझावे।।
ये दुनिया दो दिन का मेला जो आवे सो जावे
जीवन भर सुलगावै चिंता मरत चिता सुलगावै।।

ऐसी मस्ती देख युवक की काल बलि मुस्कावे
अपनी ही सुन्दर काय में वह क्रीड़ा हो जावे।।
ये दुनिया दो दिन का मेला जो आवे सो जावे
जीवन भर सुलगावै चिंता मरत चिता सुलगावै।।

अंत समय की गोदी में आ हर कोई सो जावे
भाग्य भरोसे साँसे चलती एक दिवस थम जावे।।
ये दुनिया दो दिन का मेला जो आवे सो जावे
जीवन भर सुलगावै चिंता मरत चिता सुलगावै।।

इस जीवन की अंतिम बेला जाने कब आ जावे
दूल्हे राजा को भी आकर मौत उठा ले जावे।।
ये दुनिया दो दिन का मेला जो आवे सो जावे
जीवन भर सुलगावै चिंता मरत चिता सुलगावै।।

जिस मुख से प्रभु नाम जापे नर उसमें क्या क्या जावे
शास्त्र अनेको पढ़ करके भी जीवन पढ़ ना पावे।।
ये दुनिया दो दिन का मेला जो आवे सो जावे
जीवन भर सुलगावै चिंता मरत चिता सुलगावै।।

अंतिम घड़िओं में प्रभु सुमिरन विरला ही कर पावे
एक तरुवर से दूजे पर फिर पंछी वास बनावे।।
ये दुनिया दो दिन का मेला जो आवे सो जावे
जीवन भर सुलगावै चिंता मरत चिता सुलगावै।।

जो दिन बीत गया जीवन का वो फिरसे ना आवे
प्रातः जो कलियाँ मुस्कावे संध्या को मुरझावे।।
ये दुनिया दो दिन का मेला जो आवे सो जावे
जीवन भर सुलगावै चिंता मरत चिता सुलगावै।।

जाने की बेला में प्राणी हाहाकार माचवे
जन्म तिथि ही पुण्यतिथि बन मरघट में पोहोचावे।।
ये दुनिया दो दिन का मेला जो आवे सो जावे
जीवन भर सुलगावै चिंता मरत चिता सुलगावै।।

मानवपन के हीरे को ना कांच समझ ठुकरावे
संयम पुष्प बिना जीवन तरुण कैसे शोभा पावे।।
ये दुनिया दो दिन का मेला जो आवे सो जावे

जीवन भर सुलगावै चिंता मरत चिता सुलगावै।।

क्या खोया क्या पाया अब तक कोई सोच ना पावे
इस दुर्लभ नरभव को प्राणी जाने फिर कब पावे।।
ये दुनिया दो दिन का मेला जो आवे सो जावे
जीवन भर सुलगावै चिंता मरत चिता सुलगावै।।

जो पंछी दर्पण से जूझे और स्वयं थक जावे
भौतिक सुख के पीछे मानव क्यों ही दुःख उठावे।।
ये दुनिया दो दिन का मेला जो आवे सो जावे
जीवन भर सुलगावै चिंता मरत चिता सुलगावै।।

चंदा सूरज आवे जावे और उम्र ढल जावे
आँख खोल कर भी अज्ञानी सोया ही रह जावे।।
ये दुनिया दो दिन का मेला जो आवे सो जावे
जीवन भर सुलगावै चिंता मरत चिता सुलगावै।।

खुशियों के सपने संजो कर मानव मन बहलावे
पुण्य कर्म फल मन को भावे तो भी पाप कमावे।।
ये दुनिया दो दिन का मेला जो आवे सो जावे
जीवन भर सुलगावै चिंता मरत चिता सुलगावै।।

अब कर्मो ही यह सारा जीवन बीता जावे
काल बिताने वाले को भी आखिर काल बितावे।।
ये दुनिया दो दिन का मेला जो आवे सो जावे
जीवन भर सुलगावै चिंता मरत चिता सुलगावै।।

प्राणो से भी प्यारी काय कब तक साथ निभावे
हर संयोग वोयोगमयी है भोग रोग उपजावे।।
ये दुनिया दो दिन का मेला जो आवे सो जावे
जीवन भर सुलगावै चिंता मरत चिता सुलगावै।।

जिसको नर अपना माने वह सपना ही कहलावे
मरघट तक जावे सम्बन्धी आगे साथ न जावे।।
ये दुनिया दो दिन का मेला जो आवे सो जावे
जीवन भर सुलगावै चिंता मरत चिता सुलगावै।।

देख स्वयं की अंतिम हालत मन को रोना आवे
जर्जर काया से कैसे तब कोई धर्म कमावे।।
ये दुनिया दो दिन का मेला जो आवे सो जावे
जीवन भर सुलगावै चिंता मरत चिता सुलगावै।।

अबतक कितने देह धरे हैं गिनती कौन गिनावें
तृष्णा दाह विषय ईंधन से कब कैसे बुझ पावे।।
ये दुनिया दो दिन का मेला जो आवे सो जावे
जीवन भर सुलगावै चिंता मरत चिता सुलगावै।।

भाव भाव की पीड़ा के आंसू कोई पार न पावे
दुर्घटना अरु अपघातों की संख्या कौन बतावे।।
ये दुनिया दो दिन का मेला जो आवे सो जावे
जीवन भर सुलगावै चिंता मरत चिता सुलगावै।।

माताओं के नयन सलिल का कौन हिसाब लगावे
उनके दुग्ध पान के सन्मुख सागर तनिक दिखावे ।।
ये दुनिया दो दिन का मेला जो आवे सो जावे
जीवन भर सुलगावै चिंता मरत चिता सुलगावै ।।

तन मन धन की चिंताओं में मानव चैन ना पावे
सुख आभासों के पीछे ही काल गावता जावे ।।
ये दुनिया दो दिन का मेला जो आवे सो जावे
जीवन भर सुलगावै चिंता मरत चिता सुलगावै ।।

जानबूझ कर अनजाना बन अपनी धुन में जावे
एक दिवस यह गाफिल निद्रा चिरनिद्रा बन जावे ।।
ये दुनिया दो दिन का मेला जो आवे सो जावे
जीवन भर सुलगावै चिंता मरत चिता सुलगावै ।।

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%b5%e0%a5%88%e0%a4%b0%e0%a4%be%e0%a4%97%e0%a5%8d%e0%a4%af-%e0%a4%ad%e0%a4%be%e0%a4%b5%e0%a4%a8%e0%a4%be-by-rohit-chaturvedi/